जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मार्च 2023 ।। अंक – 32 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

उद्यम से मुन्नी के जीवन में आया नवविहान
(पृष्ठ – 02)

स्वरोजगार से तरक्की की राह पर वीणा ने बढ़ाया कदम
(पृष्ठ – 03)

सामुदायिक पुस्तकालय के माध्यम से मिलेगी पुस्तकें और मार्गदर्शन
(पृष्ठ – 04)

समर्पण जीविका महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी छोटे और सीमांत महिला किसानों को तकनीकी जानकारी, खाद और उच्च गुणवत्ता वाले बीज सहित कई जरूरी कृषि उपयोगी वस्तुओं को बाजार से कम कीमत पर उपलब्ध कराने एवं उत्पादित फसलों की उचित कीमत दिलाने हेतु बाजार से जुड़ाव कराने के उद्देश्य से समर्पण जीविका महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की स्थापना वर्ष 2013 में की गयी। कंपनी की सभी 2288 शेयरधारक जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। वर्त्तमान में कंपनी बिहार के मुजफ्फरपुर जिला के सभी प्रखंडों में कार्य कर रही है।

स्थाई रूप से प्रभावी क्षमता निर्माण कर उत्पादकता संवर्धन को बढ़ाकर पारदर्शी कृषि व्यवसाय के माध्यम से किसानों और शेयरधारकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार करने के मकसद से इस कंपनी का गठन किया गया है। कंपनी सब्जियों के बीज, गेहूं, दलहन, ताजी सब्जियां, लीची, आम, पोषण वाटिका किट, कृषि यंत्र, आलू, धान आदि के उत्पादन और विपणन के क्षेत्र में काम कर रही है। वित्तीय वर्ष 2022–23 में कंपनी ने 378.63 लाख रुपये का कारोबार किया, जिससे 29.20 लाख रुपये का लाभ अर्जित हुआ है।

समर्पण जीविका महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड से संबद्ध 226 जीविका दीदियां लीची के उत्पादन कार्य से जुड़ी हैं। समर्पण कंपनी लीची के फसल के पूर्व एवं फसल के बाद बाजार तक के प्रक्रियाओं में सूक्ष्म रूप से देखभाल करती हैं। फसल के पहले पोषण एवं रोग प्रबंधन के लिए किसान दीदियों को प्रशिक्षण एवं खाद तथा दवाई उपलब्ध कराई जाती है। फसल तैयार हो जाने के बाद निबंधित खरीदार जैसे– रिलायंस, बिग बास्केट, फ्रेश पिक्स आदि के मांग के आधार पर प्रतिदिन प्रात: 4 बजे से फल की तुराई एवं ग्रेडिंग पैकेजिंग कर तय समय पर एयर कार्गो द्वारा विभिन्न शहरों जैसे मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद आदि जगहों पर भेजा जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में समर्पण कंपनी द्वारा लीची उत्पादकों को बेहतर कीमत और खरीदारों को गुणवत्तापूर्ण उत्पाद की आपूर्ति का पूरा ख्याल रखा जाता है। साथ ही किसानों को कंपनी के माध्यम से बेचे गए उत्पादों की राशि एक दिन के अंदर उनके खाते में उपलब्ध करा दी जाती है।

कंपनी किसान दीदियों के कृषि खर्च को कम करने एवं परिवार के बेहतर पोषण के लिए घर के आस–पास या बाड़ी में पोषण वाटिका एवं सब्जी लगाने को निरंतर प्रोत्साहित करती है। जिसमें देशी किस्म के फलदार, पत्तेदार, बींस और कंद वाले सब्जियों के बीज का चयन किया जाता है । दीदियों को बाजार मूल्य से लगभग सस्ते दाम पर बीज उपलब्ध कराई जाती है।

समर्पण कंपनी अपने किसानों को उत्पाद का बेहतर मूल्य सुनिश्चित करने का हमेशा प्रयास करती है। मुजफ्फरपुर में गेहूं की अच्छी पैदावार होती है। किसानों को साधारण गेहूं फसल का मूल्य एम॰एस॰पी॰ से कम मिल पाता है। इसलिए समर्पण कंपनी बिहार राज्य बीज एवं ऑर्गेनिक प्रमाणन एजेंसी से उत्पादक संस्था का निबंधन कर प्रमाणित गेहूं बीज का उत्पादन करवाती है। जिससे किसानों को उत्पादित बीज का एम॰एस॰पी॰ मूल्य के अतिरिक्त बोनस भी मिल जाता है, जो बाजार मूल्य से 20 प्रतिशत अधिक होता है।

करीब एक दशक से समर्पण कंपनी किसानों की जिंदगी में खुशहाली लाने के लिए काम कर रही है। बीज उत्पादों के साथ ही तैयार फसलों को बाजार मुहैया कराने में कंपनी अहम भूमिका निभा रही है।

उद्यम से मुन्नी के जीवन में आया नवविहान

मुन्नी देवी बेगूसराय जिला के बरौनी प्रखंड अंतर्गत पिपरा देवस, नवाटोल की रहने वाली हैं। मुन्नी देवी वर्ष 2015 से सितारा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं। जीविका समूह से जुड़ाव के पूर्व वह एक सामान्य गृहिणी थीं और अपने पति की मजदूरी से होने वाली आय से किसी प्रकार अपने परिवार का भरण–पोषण करती थीं। सितारा जीविका स्वयं सहायता समूह एवं संस्कार जीविका महिला ग्राम संगठन की गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेने के कारण उनका आत्मविश्वास बढ़ा। जिसके बाद मुन्नी ने खुद एवं अपने परिजनों के जीवन को बेहतर बनाने के बारे में चिंतन करने लगी।

समय के साथ उन्हें जीविका से कई नई जानकारियां हासिल हुई। उन्होंने आर्थिक सशक्तीकरण के लिए समूह से कई मौकों पर ऋण लिया और अपने कार्य को आकार दिया। लेकिन कुछ नया और अपना करने की चाह मुन्नी के मन में बनी रही। इसी बीच प्रारंभिक प्रशिक्षण एवं जानकारी के बाद मुन्नी गैर कृषि गतिविधि के तहत फुटबॉल, नेकगार्ड, पिल्लो, आई गार्ड आदि बनाने का कार्य करने लगी। शुरू में थोड़ी कठिनाई के बाद उनके कार्य को गति मिली। वर्त्तमान में वह अपने उत्पाद को बंगलोर की 'ओरिका' कंपनी को उपलब्ध करा रही हैं। इस प्रकिया में मुन्नी को लगभग 5 से 6 हजार रूपये की आमदनी प्रतिमाह हो रही है। इस कार्य में जीविका का उन्हें भरपुर सहयोग मिला। समूह से 80 हजार रुपये ऋण की मदद से मुन्नी ने अपने व्यवसाय को आकार दिया।

मुन्नी बताती हैं कि–'आज मेरे व्यवसाय के कारण मेरी अपनी अलग पहचान है। आज मैं एक सफल उद्यमी हूं और अपने व्यवसाय का सफलता पूर्वक संचालन कर रही हूं।' वह आगे कहती हैं कि–'जीविका के कारण जहां मेरी आर्थिक स्थिति में तो बदलाव हुआ ही, वहीं निर्णय लेने की क्षमता का भी विकास हुआ है।' उनकी इच्छा अपने व्यवसाय को और भी ज्यादा ऊंचाई पर ले जाने की है। मुन्नी के लगन एवं मेहनत से इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि आने वाले दिनों में वह सफलता का नया मुकाम हासिल करेंगी।

जीविका से जुड़कर सजदा के सपने हुए सच

महीने में 15 लाख का कारोबार। आमदनी 70–80 हजार रूपये महीना। सामान्य ग्रामीण महिला के लिए यह किसी सपना सरीखा है। पर इसे सच कर दिखाया है जमुई के सोनो प्रखंड अंतर्गत पैरामटियाना पंचायत के भरतपुर ग्राम निवासी सजदा खातून की। सजदा खातून अत्यंत गरीब परिवार से ताल्लुक रखती हैं और अशिक्षित हैं। घर–परिवार का भरण–पोषण मजदूरी करके करती थीं। बाद में घर पर ही आटा का निमकी बनाकर परिवार चलाने लगीं। परिवार के सभी सातों सदस्य मिलकर निमकी बनाते थे, लेकिन मुनाफा मनमाफिक नहीं था। किसी तरह से परिवार चल रहा था। इन्हीं समस्याओं के बीच सजदा ने कुछ बड़ा करने का मन बनाया। पूर्वजों की जमीन को बेचकर एवं समूह से 50 हजार रूपये ऋण लेकर चार लाख पचास हजार रुपये में बनारस से निमकी बनाने की मशीन सजदा ने खरीद लिया। इसके बाद तो उनके सपनों को मानों पंख लग गया। अब वह मशीन से रोजाना 5–6 क्विंटल निमकी बनाती है। दीदी की निमकी की मांग जिले में इतनी ज्यादा है कि वह रोजाना 50 हजार रूपये की निमकी बनाकर जिले के सभी प्रखंडो में आपूर्ति करती हैं। इस कार्य में उनके पति एवं परिवार के अन्य सदस्य उनका साथ देते हैं। सजदा बताती है कि–'महीने में लगभग 15 लाख रूपये का कारोबार कर रही हूँ। हर माह लगभग 70–80 हजार रूपये की आमदनी हो रही है। इस कारोबार की आमदनी से 5 लाख रूपये में जमीन भी खरीदी हूँ।'

आज उनका परिवार खुशहाल है। सभी को पौष्टिक भोजन मिलता है और बच्चे भी पढाई कर रहे हैं। वह समूह की बैठकों में भी जाकर अन्य दीदियों को कारोबार के लिए प्रेरित करती हैं। इसके साथ ही वह अन्य दीदियों को आगे बढ़ने का रास्ता भी दिखाती हैं।

हुनर से मिली नई पहचान

कई महिलाओं ने अपने हुनर को व्यवसाय से जोड़कर आर्थिक एवं सामजिक तौर पर सशक्त बनाया है। उन्हीं महिलाओं में से एक है लखीसराय जिला अंतर्गत पिपरिया प्रखंड स्थित रामचन्द्रपुर गाँव की जीविका दीदी नीता देवी। नीता देवी ने मिठाई एवं नमकीन बनाने का हुनर अपने मायके में सीखा था। ससुराल में आने के बाद अपने इस हुनर को व्यवसाय में बदला। उनके पति राजाराम मिठाई की दुकान पर काम करते थे। वहां मेहनताना कम मिलता था। लिहाजा नीता ने खुद मिठाई एवं नमकीन का व्यवसाय करने की सोची। जिसमें उन्हें पति का भी साथ मिला।

नीता देवी चंपा जीविका स्वयं सहायता समूह से पिछले तीन साल से जुडी हैं। उन्होंने समूह से 20,000 रूपये ऋण लेकर मिठाई दुकान की शुरुआत की। दुकान में नीता और उनके पति रसगुल्ला, मुरब्बा, पेठा, बेसन का सेव एवं नमकीन बनाकर बेचना शुरू किया। दुकान चलने लगी। अब प्रतिदिन लगभग 5,000 रुपये की बिक्री हो रही है, जिससे उन्हें 800 से 1,000 रूपये मुनाफा हो जाता है। उन्होंने समूह से लिए गए ऋण 20,000 रुपये में से 8,000 रूपये वापस कर दिया है। नीता देवी बताती हैं कि जीविका समूह से ऋण मिलने से उन्हें व्यवसाय शुरू करने में आसानी हुई। नीता देवी जीविका के माध्यम से सरस मेला समेत अन्य कार्यक्रमों भी अपना स्टॉल लगाती हैं। इससे उनकी नई पहचान बनी और आर्थिक उन्नति भी हुई है। अब वह अपने व्यवसाय को बड़ा आकार और अपने उत्पाद को 'ब्रांड' बनाने की दिशा में अग्रसर हैं।

स्वरोजगार से तरक्की की राह पर वीणा ने बढ़ाया कदम

जहाँ चाह हो वहाँ राह निकल आती है। हिम्मत से काम लेने पर रास्ता मिल ही जाता है। पूर्व में आर्थिक तंगी से जूझ रही वीणा देवी ने हिम्मत से रास्ता तलाश कर पूरे परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर संभाल लिया है। किशनगंज जिला के दिघलबैंक प्रखंड की रहने वाली वीणा दीदी, वर्ष 2015 में जीविका समूह से जुड़ी थी। समूह में जुड़ने से उनका क्षमतावर्धन हुआ। वर्ष 2017 में समूह से 20,000 रुपये ऋण से उन्होंने मनिहारी की दुकान खोली। दुकान की कमाई से उन्होंने 10 माह के अंदर ही ऋण वापस कर दिया। शुरुआती सफलता से उत्साहित होकर उन्होंने दोबारा समूह से 30,000 रूपये और फिर बाद में 45,000 रुपये का ऋण लिया। इस राशि का उन्होंने दुकान में निवेश किया। अधिक सामान की उपलब्धता से ग्राहकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई। इससे दीदी की कमाई भी बढ़ी। वीणा देवी बताती हैं कि–'दुकान से उन्हें महीने में लगभग 25,000 से 30,000 रुपये की आमदनी हो जाती है।'

वीणा दीदी दुकान की कमाई से न सिर्फ ससमय ऋण वापस किया बल्कि घर की जरूरतों को भी पूरा कर पा रही हैं। वीणा दीदी ने दुकान की कमाई से पक्के का घर बनाया है। साथ ही दो बेटी की शादी की है। लड़के को स्नातक की पढ़ाई करवा रही हैं। एक तरफ जहाँ कुछ वर्ष पहले तक आर्थिक तंगी की वजह से वीणा दीदी को रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा कर पाने में दिक्कत हो रही थी, वहीं आज वह आर्थिक तरक्की की राह पर तेजी से आगे बढ़ रही हैं।

सामुदायिक पुस्तकालय
ज्ञान और मार्गदर्शन का नया केन्द्र

पीढ़ीगत गरीबी के दुष्चक्र को तोड़ने के लिए शिक्षा एक अचूक साधन है। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले गरीब परिवारों के बच्चे पुस्तकें, अन्य पठन सामग्रियों के अभाव तथा सही जानकारी व मार्गदर्शन नहीं मिल पाने की वजह से पूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। जिस कारण से वे सही अवसरों का लाभ नहीं उठा पाते हैं। ऐसे में जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े ग्रामीण परिवारों के बच्चों को पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने हेतु समुचित सहयोग प्रदान कराने एवं कैरियर निर्माण के संबंध में सही मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से एक नई पहल की जा रही है। इस दिशा में जीविका द्वारा बिहार के 32 जिलों के 100 प्रखंडों में चिह्नित संकुल स्तरीय संघ स्तर पर 'सामुदायिक पुस्तकालय सह कैरियर विकास केंद्र' (सी.एल.सी.डी.सी.) की स्थापना की जा रही है। इसका स्वामित्व, रखरखाव, संचालन एवं प्रबंधन संबंधित संकुल स्तरीय संघ के माध्यम से जीविका दीदियों द्वारा किया जा रहा है। पुस्तकालय में विभिन्न कार्यक्रमों और सेवाओं के दैनिक संचालन, समन्वय, सुरक्षा और रखरखाव के लिए 'विद्या दीदी' के रूप में एक समर्पित सामुदायिक पेशेवर कार्य कर रही हैं।

जीविका के इस अभिनव पहल से ग्रामीण स्तर पर युवक–युवतियों को पढ़ाई के लिए उपयोगी पुस्तकें एवं अन्य पाठ्य सामग्रियां उपलब्ध होने के साथ–साथ कैरियर निर्माण से संबंधित मार्गदर्शन भी मिलेगा। पुस्तकालय में उपयोगी पुस्तकों, दैनिक समाचार पत्रों, समसामयिक पत्रिकाएं एवं गुणवत्तापूर्ण डिजिटल लर्निंग सामग्रियों की उपलब्धता होने के साथ–साथ छात्रों के स्वध्याय हेतु आरामदायक उपयुक्त फर्नीचर और अनुकूल शैक्षणिक वातावरण व पठन परिवेश भी उपलब्ध होगा। पुस्तकालय में डिजिटल एवं भौतिक क्लासरूम के माध्यम से विभिन्न प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में नामांकन हेतु प्रवेश परीक्षाओं एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी से संबंधित मार्गदर्शन भी दिया जाएगा।

स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों के युवक–युवतियां प्रारंभिक शिक्षा के बाद बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। वे सही जानकारी तथा मार्गदर्शन के अभाव एवं आवश्यक संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाने की वजह से पूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं और न ही कैरियर निर्माण हेतु सही अवसरों का लाभ ले पाते हैं। इस कमी को दूर करने के लिए ही सामुदायिक पुस्तकालय सह कैरियर विकास केंद्र की स्थापना की परिकल्पना की गई है। यहां शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक युवक–युवतियों को पठन–पाठन के लिए जरूरी सामग्रियों की उपलब्धता के साथ–साथ उच्च शिक्षा तथा कैरियर संबंधी विभिन्न अवसरों की जानकारी एवं सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

इसके अलावा जीविका समूह से जुड़े परिवारों के सदस्यों के उच्च शिक्षा हेतु प्रतिष्ठित संस्थानों व विश्वविद्यालयों में पढ़ाई पूर्ण करने में होने वाले आवश्यक खर्च की पूर्ति के लिए शिक्षा वित्तपोषण सहायता कार्यक्रमों के तहत छात्रवृत्ति, बिहार स्टुडेंट क्रेडिट कार्ड योजना, बैंकों और जीविका स्वयं सहायता समूह से शिक्षा ऋण प्राप्त करने में सहायता प्रदान की जाएगी। ग्रामीण क्षेत्रों के युवक–युवतियों को विभिन्न छात्रवृत्तियों, प्रतिभा खोज, प्रतिभा सम्मान, फेलोशिप, इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप, तकनीकी एवं व्यवसायिक प्रशिक्षणों, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा आदि के बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी ताकि वे अवसरों का लाभ उठा सकें। ग्रामीण स्तर पर संचालित होने वाले सामुदायिक पुस्तकालयों में उच्च शिक्षा और कैरियर निर्माण से संबंधित विभिन्न अवसरों की जानकारी एवं सहायोग प्रदान करने के साथ–साथ जीविकोपार्जन व आय बढ़ोत्तरी हेतु उद्यमिता से संबंधित प्रशिक्षण, कार्यशाला एवं उद्यम विकास के अवसरों और इसमें मिलने वाले सहयोग के बारे में भी जानकारी मुहैया कराई जाएगी।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार